Ei – मौखिक ब्यबस्था | 1

– Save This Page as a PDF–

मौखिक ब्यबस्था



जैसा कि अर्नोल्ड फ्रुचटेनबाम ने मसीह के
जीवन पर अपनी टेप श्रृंखला में सिखाया था, मौखिक ब्यबस्था यीशु और फरीसियों के बीच विवाद का वास्तविक बिंदु था। मौखिक ब्यबस्था तल्मूड को संदर्भित करता है, जो मूसा की पहली पांच पुस्तकों पर रब्बी टिप्पणियों का संकलन है, जिसे टोरा कहा जाता है। तल्मूड, लगभग ५०० ईस्वी में पूरा हुआ, इसमें मिश्ना और साथ ही गेमारा (मिश्ना + गेमारा = तल्मूड) नामक मिश्ना पर टिप्पणी शामिल है। लगभग १२वीं शताब्दी तक यह परंपरा मिड्रैश नामक एक और संग्रह को शामिल करने के लिए विकसित हुई। रब्बियों ने सिखाया कि जब मसीहा आएगा, तो वह न केवल मौखिक ब्यबस्था में विश्वास करेगा, बल्कि वह नए मौखिक ब्यबस्था बनाने में भी भाग लेगा।

ईसा मसीह के जन्म से सदियों पहले, शास्त्रियों और फरीसियों ने नियमों और विनियमों का एक पूरा समूह विकसित किया, जिसे हलाचा या मौखिक ब्यबस्था के रूप में जाना जाता है। यहूदियों ने उन्हें पुरनियों की परम्परा कहा (मत्ती १५:२), परन्तु येशुआ ने उन्हें मनुष्यों की परम्परा कहा (मरकुस ७:८)। रब्बी परंपरा के अनुसार, मौखिक ब्यबस्था सीनै पर्वत तक जाता है। वे सिखाते हैं कि मौखिक ब्यबस्था की अवधारणा लैव्यवस्था २६:४६ में पाई जा सकती है: ये क़ानून, अध्यादेश और टोरोट [तोराह का बहुवचन] हैं, जो यहोवा ने अपने और बेनी-इज़राइल [इज़राइल के बच्चे’ के बीच बनाए थे] मोशे के हाथ से सिनाई पर्वत पर। ऋषियों ने समझा कि चूंकि टोरा शब्द इस आयत में बहुवचन रूप में टोरोट के रूप में आता है, इसलिए स्पष्ट संकेत है कि

Ei – मौखिक ब्यबस्था | 2

इज़राइल को निर्देशों के दो सेट दिए गए थे, एक लिखित और दूसरा मौखिक। मसीहाई यहूदी मौखिक ब्यबस्था को लिखित टोरा के समान अधिकार नहीं देते हैं।

रब्बी व्यवस्थाविवरण ३०:११-१२ को उद्धृत करते हुए अपनी व्याख्या में और भी आगे बढ़ते हैं, और कहते हैं कि आज्ञाएँ स्वर्ग में नहीं बल्कि पृथ्वी पर हैं: इस मिट्ज़्वा के लिए जो मैं आज तुम्हें आज्ञा दे रहा हूँ वह तुम्हारे लिए बहुत कठिन नहीं है, न ही यह है दूर। यह स्वर्ग में नहीं है, कि तुम कहो, “कौन हमारे लिये स्वर्ग पर चढ़ेगा, और उसे हमारे लिये ले आएगा, और हमें सुनाएगा कि हम उसे करें?” मोशे केवल यह कह रहा था कि अनुबंध को समझना, विश्वास करना और उसका पालन करना उनसे परे नहीं है। हालाँकि, रब्बियों ने इसका गलत अर्थ निकाला कि ऋषि स्वर्ग में चले गए और मौखिक ब्यबस्था को वापस धरती पर ले आए।

अंततः इस्राएलियों ने देखा कि मौखिक ब्यबस्था टोरा के बराबर, या उससे भी बेहतर हो गया, भले ही मोशे ने चेतावनी दी: अपने परमेश्वर यहोवा के मित्ज़वोट का पालन करने के लिए जो मैं तुम्हें दे रहा हूं, जो मैं कह रहा हूं उसमें कुछ न जोड़ें, और करें उसमें से घटाना नहीं (व्यवस्थाविवरण ४:२)। कुछ लोगों का मानना है कि चमत्कार करने वाले रब्बी को इज़राइल राष्ट्र ने अस्वीकार कर दिया था क्योंकि वह राजनीतिक व्यक्ति बनने में असफल रहे जिसकी इज़राइल को इच्छा थी। उन्होंने रोमन उत्पीड़न को ख़त्म नहीं किया और मसीहा साम्राज्य की शुरुआत नहीं की। लेकिन सुसमाचार कभी भी इसका कारण नहीं बताते। इज़राइल द्वारा येशुआ को अस्वीकार करने का असली कारण मसीहा द्वारा मौखिक ब्यबस्था को अस्वीकार करना था। यह समझने के लिए कि मुद्दे क्या थे, हमें यहूदी इतिहास के बारे में कुछ समझने की ज़रूरत है।

बेबीलोन की कैद से लौटे यहूदी नेताओं, जैसे कि एज्रा और अन्य, ने माना कि उन्होंने सत्तर साल निर्वासन में बिताए थे क्योंकि उन्होंने टोरा का उल्लंघन किया था (जेरेमिया Gu पर टिप्पणी देखें – शाही बेबीलोनियन शासन के सत्तर साल)। उन्होंने मोशे की आज्ञाओं को तोड़ा था, विशेषकर मूर्तिपूजा के क्षेत्र में। इसलिए एज्रा, मुंशी, ने वह स्थान स्थापित किया जिसे सोफिम स्कूल के नाम से जाना जाता था। सोफ़र, सोफिम के लिए एकवचन है और इसका अर्थ है मुंशी। उन्होंने शास्त्रियों को एक विद्यालय में एकत्रित किया। उन्होंने टोरा में ६१३ आज्ञाओं में से प्रत्येक को पढ़ना और उनकी व्याख्या करना शुरू किया। वे प्रत्येक आज्ञा पर विस्तार से चर्चा करते थे, कि इसे रखने में क्या शामिल था और इसे तोड़ने में क्या शामिल था। सिद्धांत यह था कि यदि वे यहूदी लोगों को यह स्पष्ट समझ दें कि प्रत्येक आज्ञा क्या है और उसका पालन कैसे करना है, तो वे ऐसा करेंगे। इस तरह उन्हें बेबीलोन की बन्धुवाई की तरह यहोवा के किसी भी अन्य अनुशासन से बचने की आशा थी। इसलिए, मूल इरादा बहुत सम्मानजनक था, और अगर वे वहीं रुक जाते तो सब कुछ अच्छा और अच्छा होता। होशे ने कहा कि लोग ज्ञान के अभाव से नष्ट हो जाते हैं (होशे ४:६)। इसलिए एज्रा और अन्य शास्त्री ज्ञान की किसी भी कमी को दूर करना चाहते थे। हालाँकि, सोफिम की पहली पीढ़ी का निधन हो गया।

Ei – मौखिक ब्यबस्था | 3

सोफिम की दूसरी पीढ़ी ने अपने कार्य को अधिक गंभीरता से लिया। उन्होंने कहा कि यह उनके लिए केवल आज्ञाओं की व्याख्या करने के लिए ही पर्याप्त नहीं था। उन्होंने नए नियमों और विनियमों के साथ टोरा (हिब्रू से’एग ला-टोरा) के चारों ओर बाड़ बनाने की कल्पना (या शब्द चित्र) का उपयोग किया क्योंकि वे इसकी रक्षा करना चाहते थे। उनकी सोच यह थी कि यहूदी बाहरी बाड़ के नए नियमों और विनियमों को तोड़ सकते हैं, लेकिन यह उन्हें मूल ६१३ आज्ञाओं (वास्तव में ३६५ निषेध और २४८ आज्ञाएँ) में से एक को तोड़ने से रोकेगा और इज़राइल राष्ट्र पर दैवीय अनुशासन लाएगा। फिर से, जैसा कि बेबीलोन की बन्धुवाई में हुआ था। रब्बियों ने सिखाया कि मोशे ने सिनाई से [मौखिक ब्यबस्था] प्राप्त किया और इसे यहोशू को सौंप दिया, और यहोशू ने बुजुर्गों को, और बुजुर्गों ने भविष्यवक्ताओं को और भविष्यवक्ताओं ने इसे महान सभा के लोगों को सौंप दिया (पिर्के एवोट १:१), या महान महासभा (Lg – महान महासभा देखें)।

सभी अच्छे इरादों के साथ उन्होंने इन नए नियमों और विनियमों पर काम करना शुरू किया। उन्होंने जिस सिद्धांत का उपयोग किया वह यह था कि एक सोफ़र एक सोफ़र से असहमत हो सकता है, लेकिन वे टोरा से असहमत नहीं हो सकते। इन नए नियमों और विनियमों को बनाने में, वे तब तक आपस में बहस करते रहेंगे जब तक कि बहुमत से कोई निर्णय नहीं हो जाता। एक बार यह निर्णय हो जाने के बाद, दुनिया भर के सभी यहूदियों के लिए इसका पालन करना बिल्कुल अनिवार्य हो गया। यह काम अव्यवस्थित तरीके से नहीं किया गया। उन्होंने तर्क के एक रूप का उपयोग किया जिसे पिलपुल कहा जाता है, जिसका उच्चारण पिल-पुल होता है। अंग्रेजी में इसका अर्थ ‘फिल-फुल’ होगा और हिब्रू में इसका अर्थ ‘बहस’ होगा। इसका मतलब चटपटा या तीखा भी हो सकता है, लेकिन इस संदर्भ में इसका वास्तव में मतलब चटपटा या तीखी बहस है। यह तल्मूडिक अध्ययन में प्रयुक्त रब्बीनिक तर्क का एक रूप है जो एक कथन या आदेश से शुरू होता है, और मूल से आने वाले कई नए कथन या नए आदेश विकसित करता है। यह एक अनुत्पादक बाल विभाजन है जिसका उपयोग स्पष्टता बढ़ाने या अर्थ प्रकट करने के लिए नहीं किया जाता है, बल्कि यह अपनी चतुराई प्रदर्शित करने का एक साधन है। यहाँ एक उदाहरण है।

मोशे ने कहा कि तुम्हें बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में जीवित नहीं पकाना चाहिए (व्यवस्थाविवरण १४:२१)। उस आज्ञा का मूल उद्देश्य, जैसा कि परमेश्वर की ओर से मूसा को दिया गया था, आम कनानी प्रथा से बचना था। कनानी लोग पहले जन्मे बच्चे को उसकी माँ से ले लेते थे, बकरी को दूध पिलाते थे, फिर बच्चे को उसी की माँ के दूध में जीवित उबाल देते थे। तब वे उस बच्चे को बाल के लिये बलि के रूप में चढ़ाते थे
– पहली उपज की भेंट।

यहोवा ने यह आज्ञा मूसा को लगभग १४०० ईसा पूर्व में दी थी। १००० वर्षों के बाद अब आसपास कोई कनानी नहीं थे। अब कोई बच्चों को माँ के दूध में नहीं उबाल रहा। उस आज्ञा का मूल उद्देश्य भूल गया था। इसलिए जब सोफिम ने टोरा के चारों ओर बाड़ बनाना शुरू किया और वे इस आदेश पर आए, तो उन्होंने सवाल पूछा, “हम यह कैसे

Ei – मौखिक ब्यबस्था | 4

सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम बच्चे को उसकी माँ के दूध में कभी न देखें?” यहीं पर पिलपुल का तर्क आया। यह इसी तरह काम करता है।

मान लीजिए आप मांस का एक टुकड़ा खाते हैं और उसके साथ एक गिलास दूध पीते हैं। चाहे कितना भी दूर क्यों न हो, यह हमेशा संभव है कि दूध उस मांस का माँ से आया हो जो आप खा रहे थे। जैसे ही आप दोनों चीजों को एक साथ निगलते हैं, मांस (बच्चा) अपनी मां के दूध में मर जाता है। इस प्रकार, यहूदी एक ही भोजन में मांस और डेयरी उत्पाद नहीं खा सकते हैं। उन्हें चार घंटे से अलग किया जाना चाहिए। रूढ़िवादी यहूदियों के लिए यह आज तक सत्य है।

लेकिन पिलपुल तर्क और भी आगे बढ़ गया। मान लीजिए आप दोपहर के भोजन के लिए बैठे हैं। आप डेयरी भोजन लेने का निर्णय लेते हैं, और आपके पास कुछ पनीर होता है। दोपहर के भोजन के बाद आप अपनी थाली धोएं और रगड़ें। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप इसे कितना धोते हैं और रगड़ते हैं, आप अपनी प्लेट में पनीर का एक छोटा टुकड़ा छोड़ सकते हैं। फिर शाम को तुम मांस का भोजन करना। आप वही प्लेट लेते हैं और उस पर एक हैमबर्गर डालते हैं (यदि यह यहूदी होता तो यह हैमबर्गर नहीं होता, यह बीफ़ बर्गर होता), और यह पनीर का एक छोटा सा टुकड़ा उठाता है जिसे आपने धोते समय नहीं देखा था। और इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि यह कितना दूर है, यह हमेशा संभव है कि पनीर आपके द्वारा खाए गए मांस की माँ के दूध से आया हो। तो जब यह आपके पेट में हो। . .

इस प्रकार, प्रत्येक यहूदी के पास व्यंजनों के दो सेट होने चाहिए, एक डेयरी के लिए और एक मांस के लिए। आज तक, प्रत्येक रूढ़िवादी यहूदी के पास व्यंजनों के दो सेट हैं। अधिकांश के पास व्यंजनों के चार सेट होते हैं क्योंकि उनके पास दो सेट केवल फसह सप्ताह के लिए उपयोग किए जाते हैं। यदि, गलती से, आप एक को दूसरा समझ लेते हैं तो यहूदी उस प्लेट का उपयोग नहीं कर सकता। इसे किसी अन्यजाति को दे दिया जाना चाहिए या नष्ट कर दिया जाना चाहिए। यह टोरा में ६१३ आज्ञाओं में से प्रत्येक के लिए चला गया। उन्होंने हज़ारों-हज़ार नये नियम और ब्यबस्था जारी किये। सोफिम का कार्य लगभग 450 ईसा पूर्व एज्रा के साथ शुरू हुआ और ३० ईसा पूर्व हिलेल के साथ समाप्त हुआ।

लेकिन फिर शास्त्रियों के बाद, रब्बियों की एक पीढ़ी आई जिसे तहनाहीम कहा गया। तहना, तहनाहीम के लिए एकवचन है और इसका अर्थ है शिक्षक। तहनाहीम ने सोफिम के काम को देखा और कहा, “इस बाड़ में अभी भी बहुत सारे छेद हैं।” इसलिए उन्होंने अधिक नियम और विनियम बनाए और ३० ईसा पूर्व में हिलेल से लेकर २२० ई. में रब्बी यहूदा- हनासी तक ढाई शताब्दियों तक इस प्रक्रिया को जारी रखा। लेकिन उन्होंने सिद्धांत बदल दिया। उन्होंने कहा कि एक तहना एक तहना से असहमत हो सकता है, लेकिन वह एक सोफ़र से असहमत नहीं हो सकता। तो ३० ईसा पूर्व (मसीहा के जन्म से ठीक पहले), सोफिम द्वारा पारित सभी नियम और ब्यबस्था, उनमें से हजारों, पवित्रशास्त्र के बराबर हो

Ei – मौखिक ब्यबस्था | 5

गए। लेकिन उन्हें लगा कि उन्हें यह बताना होगा कि सोफिम के मौखिक ब्यबस्था उनके यहूदी दर्शकों के लिए टोरा के बराबर क्यों थे। आश्चर्यजनक रूप से, उन्होंने अपने दम पर एक ऐसी शिक्षा बनाई जिसे सभी रूढ़िवादी यहूदी आज भी मानते हैं और सिखाते हैं। रब्बियों ने सिखाया कि जब मूसा सिनाई पर्वत से नीचे आया तो उसने दो ब्यबस्था दिए: लिखित ब्यबस्था, या टोरा, और मौखिक ब्यबस्था।

तहनाहीम ने कहा कि मूसा ने उन्हें लिखा नहीं बल्कि याद किया, और याद करके उसने उन्हें यहोशू को सौंप दिया, जिन्होंने उन्हें न्यायाधीशों के पास भेज दिया, जिन्होंने उन्हें भविष्यवक्ताओं के पास भेज दिया, जिन्होंने उन्हें एज्रा और सोफिम के पास भेज दिया। २२० ई. में उन्होंने सभी नियमों और विनियमों को लिख दिया, इस प्रकार तहनाहीम काल समाप्त हो गया।

तहनाहीम खुद को पथप्रदर्शक के रूप में संदर्भित करना पसंद करते थे, खुद को यहूदी धर्म के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त करने वाले के रूप में चित्रित करते थे। जब रब्बी शाऊल ने लिखा कि वह मोक्ष से पहले एक तहना था, तो उसने संकेत दिया: मैं यहूदी धर्म में अपनी उम्र के कई यहूदियों से आगे बढ़ रहा था और अपने पिता की परंपराओं के लिए बेहद उत्साही था (गलातियों १:१४)। वह कभी-कभी गलातियों और रोमन में पिलपुल तर्क दिखाता है।

तहनाहीम का मानना था कि वे टोरा से हर संभव स्थिति में हर संभव व्यक्ति के लिए एक नियम निकाल सकते हैं। मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ। टोरा ने कहा कि आप सब्त के दिन काम नहीं कर सकते (निर्गमन Dn पर मेरी टिप्पणी देखें – सब्त के दिन को पवित्र रखकर याद रखें)। तहनाहीम, या यीशु के समय के फरीसियों ने आपस में कहा, “काम क्या है?” इसलिए तहनाहीम ने बहस करने और यह निर्धारित करने के लिए स्कूल विकसित किए कि काम क्या है। उन्होंने निर्णय लिया कि काम बोझ ढोना है। फिर उन्होंने पूछा, “बोझ क्या है?” उन्होंने तय किया कि बोझ की सीमा एक सूखे अंजीर के वजन के बराबर भोजन, एक प्याले में मिलाने के लिए पर्याप्त शराब, एक निगल के लिए पर्याप्त दूध, घाव पर लगाने के लिए पर्याप्त शहद, छोटी उंगली पर लगाने के लिए पर्याप्त तेल, पानी है। आँख को नम करने के लिए पर्याप्त, सीमा शुल्क घर का नोटिस लिखने के लिए पर्याप्त कागज, वर्णमाला के दो अक्षर लिखने के लिए पर्याप्त स्याही, कलम बनाने के लिए पर्याप्त रीड, इत्यादि।

सब्त के दिन एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हुए, एक आदमी दीपक उठा सकता है या नहीं, इस पर बहस करते हुए उन्होंने अनगिनत घंटे बिताए। उन्होंने तर्क दिया कि क्या एक दर्जी ने पाप किया है यदि वह अपने वस्त्र में सुई फंसाकर घर से बाहर जाता है, यदि वह बहुत अधिक कदम चलता है तो यह एक बोझ है। उन्होंने तर्क दिया कि क्या कोई महिला ब्रोच पहन सकती है। यदि यह बहुत भारी था, तो यह एक बोझ था। उन्होंने तर्क दिया कि क्या कोई महिला नकली बाल लगा सकती है। यदि यह बहुत भारी था, तो यह एक बोझ था। उनके बीच इस बात पर भी बड़ा तर्क था कि क्या कोई आदमी सब्त के दिन कृत्रिम

Ei – मौखिक ब्यबस्था | 6

दाँत या कृत्रिम अंग के साथ भी बाहर जा सकता है क्योंकि यदि यह बहुत भारी होता, तो यह एक बोझ के समान होता। उन्होंने इस बात पर भी बहस की कि क्या कोई आदमी सब्त के दिन अपने बच्चे को उठा सकता है। ये चीज़ें उनके लिए धर्म का सार थीं और बड़ों की परंपरा कहलाती थीं (मत्ती १५:२-७)। लेकिन येशुआ का मौखिक ब्यबस्था से कोई लेना- देना नहीं था क्योंकि उसने कहा था कि यह केवल पुरुषों की परंपराएं थीं (मरकुस ७:८); इसलिए, अंततः उसे अस्वीकार कर दिया गया, रोमनों को सौंप दिया गया और क्रूस पर चढ़ा दिया गया।

उन्होंने यह भी तय किया कि सब्त के दिन लिखना काम है, लेकिन “लेखन” को परिभाषित करना होगा। इसलिए उन्होंने फैसला किया कि जो कोई अपने दाहिने या बाएं हाथ से वर्णमाला के दो अक्षर लिखता है, वह सब्बाथ के काम का दोषी है। इसके अलावा, अगर वह अलग-अलग स्याही से या अलग-अलग भाषाओं में पत्र लिखता तो वह भी दोषी होता। भले ही उसे भूलने की बीमारी से दो पत्र भी लिखने पड़े, वह दोषी है, हालांकि उसने उन्हें स्याही या पेंट, लाल चाक, या किसी भी चीज़ से लिखा है जो एक स्थायी निशान बनाता है वह दोषी है। रब्बियों ने यह भी निर्णय लिया कि जो दो दीवारों पर एक कोण बनाता है, या अपनी खाता बही के दो पन्नों पर लिखता है ताकि उनकी एक साथ जांच की जा सके, वह सब्त के दिन काम करने का दोषी है। लेकिन अगर कोई गहरे तरल पदार्थ, फलों के रस, सड़क की धूल, या रेत, या किसी ऐसी चीज़ से लिखता है जिस पर कोई स्थायी निशान नहीं बनता है, तो वह दोषी नहीं है। यदि उसने एक पत्र ज़मीन पर और एक दीवार पर, या दो पत्र किताब के पन्नों पर लिखे ताकि उन्हें एक साथ न पढ़ा जा सके, तो वह दोषी नहीं था। रब्बियों ने हर एक छोटे मुद्दे पर बहस की।

उन्होंने यह भी कहा कि सब्त के दिन उपचार करना कार्य था। तो जाहिर है कि इसे परिभाषित किया जाना था। उपचार की अनुमति तब दी जाती थी जब जीवन को खतरा हो, विशेषकर कान, नाक और गले के क्षेत्रों में। लेकिन फिर भी आप मरीज़ को बदतर होने से बचाने के लिए ही कदम उठा सकते हैं। उसे बेहतर बनाने के लिए कोई कदम नहीं उठाया जा सका। तो आप घाव पर सादा पट्टी तो लगा सकते हैं, लेकिन मरहम नहीं। आप कान में सादा पट्टी लगा सकते हैं, लेकिन औषधीय पट्टी नहीं, इत्यादि इत्यादि।

शास्त्रियों ने यह सब लिखा, और फरीसी ही थे जिन्होंने इसे बनाए रखने की कोशिश की। इसमें ६१३ लिखित आज्ञाओं में से प्रत्येक के लिए लगभग १,५०० मौखिक ब्यबस्था थे। गणित करें। यह अतिरिक्त आज्ञाओं और दायित्वों का चक्रव्यूह बन गया जो वास्तव में कई लोगों को यहोवा के साथ व्यक्तिगत संबंधों से दूर रखेगा। इसकी शुरुआत अच्छे इरादों के साथ हुई। वे टोरा के चारों ओर नियमों और विनियमों की बाड़ बनाकर उसकी रक्षा करना चाहते थे, ताकि टोरा की पहली पांच पुस्तकों में मूसा की ६१३ आज्ञाओं को भेदना या तोड़ना न हो। लेकिन यह भारी पड़ गया.

फिर रब्बियों का एक तीसरा स्कूल आया जिसे अमोरियम कहा जाता था। अमोरा, अमोरीम के लिए एकवचन है और शिक्षक के लिए एक अरामी शब्द है। उन्होंने तहनाहीम के काम को

Ei – मौखिक ब्यबस्था | 7

देखा और कहा, “बाड़ में अभी भी बहुत सारे छेद हैं।” इसलिए उन्होंने लगभग ५०० ईस्वी तक अधिक नियम और ब्यबस्था बनाना जारी रखा। उनका सिद्धांत यह था: एक अमोरा एक अमोरा से असहमत हो सकता है, लेकिन वह तहनाहीम से असहमत नहीं हो सकता। इसका मतलब यह था कि तहनाहीम के सभी नियम और ब्यबस्था तोरा के बराबर हो गए। जब यीशु का जन्म हुआ तब तक मौखिक ब्यबस्था में विश्वास पूरी तरह से उस समय की धार्मिक संस्कृति में समाहित हो गया था। यहूदी धर्म एक मृत भूसी बन गया था, उसका हृदय और जीवन समाप्त हो गया था।

सोफिम और तहनाहीम के काम को एक साथ मिलकर अंततः मिशना नामक लिखित रूप में रखा गया। यह हिब्रू भाषा में लिखा गया है और लगभग एक हजार पृष्ठों का है। अमोरियम के कार्य को गेमारा कहा जाता है। यह अरामी भाषा में लिखा गया है, और एक विशाल, विशाल पुस्तक है। मिश्ना और गेमारा तल्मूड बनाते हैं।

लेकिन बाइबल सिखाती है कि जो भी “सत्य” ईश्वर द्वारा अधिकृत और प्रेरित था, उसे लिखा गया था। यह तथ्य सीधे तौर पर मौखिक ब्यबस्था के मूल अधिकार के रब्बी विचार और पारंपरिक आधार का खंडन करता है। दूसरे तीमुथियुस ३:१६ में हम पढ़ते हैं कि सभी पवित्रशास्त्र ईश्वर से प्रेरित हैं। पवित्रशास्त्र के लिए ग्रीक शब्द ग्राफ़ है। यह लेखन के लिए ग्रीक शब्द है जो हिब्रू में केतव के उपयोग के समान है जैसा कि दानिय्येल १०:२१ में है: मैं तुम्हें बताऊंगा कि सत्य के लेखन में क्या दर्ज है। पवित्रशास्त्र शब्द का सरल, लेकिन काफी महत्वपूर्ण अर्थ है लेखन। बाइबल जो बात कहती है वह यह है कि जो भी “सत्य” ईश्वर द्वारा अधिकृत और प्रेरित था, उसे लिखा गया था। यह तथ्य सीधे तौर पर मौखिक ब्यबस्था की उत्पत्ति और अधिकार के लिए रब्बी विचार और परंपरा का खंडन करता है।

वास्तव में, पवित्रशास्त्र सिनाई पर्वत पर या कहीं और मूसा के मौखिक ब्यबस्था की असंभवता की शिक्षा देते हैं। इसे समझने के लिए हमें निर्गमन २४ को देखना चाहिए, जिसमें सिनाई पर्वत पर टोरा प्राप्त करने के बाद मूसा की इज़राइल के लोगों के पास वापसी का वर्णन है। तब मूसा ने आकर लोगों को यहोवा की सारी बातें और सब नियम बता दिए। सभी लोगों ने एक स्वर से उत्तर दिया और कहा: प्रभु ने जो कुछ कहा है, वह सब हम करेंगे। और मूसा ने आकर लोगों को यहोवा की सब बातें बता दीं। . . तब मूसा ने वाचा की पुस्तक ली और उसे लोगों को सुनाया। उन्होंने फिर कहा, जो कुछ यहोवा ने कहा है, हम करेंगे, और मानेंगे (निर्गमन २४:३-४ और ७)। इसलिए मूसा ने परमेश्वर के सभी शब्दों को उसके साथ साझा किया। हिब्रू शब्द कोल का अर्थ है सब कुछ। परिणामस्वरूप, साझा करने के लिए और कुछ नहीं था – कोई मौखिक ब्यबस्था नहीं!

लेकिन कुछ लोग पूछ सकते हैं कि क्या यह संभव नहीं है कि शायद एक दिन, एक महीना, एक साल या एक या दो दशक बाद। मूसा ने सिनाई पर्वत पर ईश्वर के और रहस्योद्घाटन को याद किया, और फिर इसे मौखिक रूप से प्रसारित किया? क्या मूसा ने एक दिन जागकर कहा, “वाह! मुझे बस सभी प्रकार के साफ-सुथरे नियम याद आ गए जो परमेश्वर ने मुझे बताए

Ei – मौखिक ब्यबस्था | 8

थे। आइए इसे अगले १,६०० वर्षों के लिए एक मौखिक ब्यबस्था बनाये रखें!” नहीं – यह संभव नहीं है.

हालाँकि पिर्के एवोट १:१ के उपरोक्त खंड में तल्मूड में कहा गया है कि मूसा ने इसे “यहोशू तक पहुँचाया”, शास्त्र वास्तव में अन्यथा कहता है: टोरा की यह पुस्तक आपके मुँह से नहीं जानी चाहिए – आपको दिन-रात इस पर ध्यान करना है , ताकि आप इसमें लिखी हर चीज़ को करने में सावधानी बरत सकें। क्योंकि तब तू अपना मार्ग सुफल करेगा, और तब तू सफल होगा (यहोशू १:८)। सिनाई पर्वत पर मूसा का कोई मौखिक ब्यबस्था यहोशू को प्रेषित नहीं किया गया था। यह सब लिखा हुआ था (हिब्रू: कटुव)। फिर भी उस कविता में पाए गए सफलता के सुंदर वादे पर ध्यान दें – मौखिक ब्यबस्था का पालन करने पर नहीं, बल्कि जो लिखा गया था उस पर आधारित है। यह स्पष्ट है कि यहोशू मौखिक ब्यबस्था का पालन करने के बारे में कुछ नहीं जानता था, लेकिन केवल परमेश्वर के लिखित वचन का पालन करना जानता था।

चार सौ साल बाद, राजा दाऊद के जीवन के अंत में और सुलैमान के शासनकाल की शुरुआत में, लिखित पवित्रशास्त्र फिर से स्पष्ट रूप से बताते हैं कि अभी भी केवल लिखित टोरा था। प्रथम राजा २:३ के अज्ञात लेखक ने लिखा: मूसा की तोराह में जो लिखा है उसके अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का पालन करो, उसके मार्गों पर चलो, उसकी विधियों, उसकी आज्ञाओं, उसके नियमों और उसके नियमों का पालन करो। ; ताकि तुम जो कुछ करो और जहां भी जाओ, वहां सफल हो। जोशुआ की तरह, दाऊद ने चार सदियों बाद लिखित शब्द के अधिकार की पुष्टि की। उस समय भी सिनाई पर्वत पर मूसा की ओर से कोई मौखिक ब्यबस्था नहीं था। पूरे तानाख में कोई मौखिक ब्यबस्था नहीं है, केवल मूसा का लिखित तोराह है (यहोशू ८:३१-३२, २३:६; दूसरा राजा १४:६, २३:२५; पहला इतिहास १६:४०; दूसरा इतिहास २३:१८, २५:४, ३०:१६, ३१:३, ३५:२६; एज्रा ३:२, ७:६; नहेमायाह ८:१ और १४, १०:३४; दानिय्येल ९:११-१३; मलाकी ४:४)।

फिर भी, मौखिक ब्यबस्था तब यीशु और फरीसियों के बीच विवाद का मुद्दा बन गया। रब्बियों ने सिखाया कि जब मसीहा आएगा तो वह स्वयं एक फरीसी होगा। उन्होंने सिखाया कि वह मौखिक ब्यबस्था को स्वीकार करेगा और उसके अधीन रहेगा। यहीं नहीं रुकने पर, उनका मानना था कि वह नए मौखिक कानूनों के निर्माण में शामिल होगा, बाड़ में छेद को और भी अधिक बंद कर देगा (आज पर्यवेक्षक यहूदियों के लिए मौखिक ब्यबस्था के चार प्रमुख आधिकारिक स्रोत हैं मिश्ना, टोसेफ्टा, द येरुशलमी, और बावली)। इसलिए, अच्छे इरादों के साथ, उनका मानना था कि कोई व्यक्ति जो मौखिक ब्यबस्था के अधिकार के तहत नहीं है, संभवतः मेशियाच नहीं हो सकता है। और उनके कार्यों का अनपेक्षित परिणाम यह हुआ कि उनकी परंपराओं को उस स्थान पर पहुंचा दिया गया, जहां उन्हें कभी नहीं मिलना था। परिणामस्वरूप, यीशु का मौखिक ब्यबस्था से कोई लेना-देना नहीं होगा क्योंकि वह जानता था कि वह इसका लेखक नहीं है। यह मानव निर्मित था। और क्योंकि उसने इसे अस्वीकार कर दिया था, महासभा ने उसे अस्वीकार कर दिया।